अंक–4 वर्ष–2014

प्रयास

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

उत्तराखण्ड एवं पष्चिम उत्तर प्रदेष भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र
देहरादून (उत्तराखण्ड)

प्रयास

संरक्षक

ओ. पी. त्रिपाठी, निदेषक (वरिश्ठ प्रषा. ग्रेड)
उत्तराखण्ड एवं पष्चिम उ0 प्र0 भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र
देहरादून

परामर्ष एवं प्रबंधन

आर. एम. घिल्डियाल, अधीक्षक सर्वेक्षक

संपादक

दिवाकर दुबे
हिंदी अनुवादक

कम्प्यूटर सहयोग

प्रदीप कुमार वर्मा एवं अमित कुमार

पत्रिका में प्रकाषित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।
इनसे सम्पादक मंडल तथा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का सहमत होना आवष्यक नही है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
उत्तराखण्ड एवं पष्चिम उत्तर प्रदेष भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र
17–ई0सी0 रोड़, देहरादून
उत्तराखण्ड

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. Swarna Subba Rao
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथी बड़कला एस्टेट,
पोस्ट बॉक्स नं0–37,
देहरादून–248001
(उत्तराखण्ड)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तराखण्ड एवं पश्चिम उ0 प्र0 भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, देहरादून इस वर्ष भी अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'प्रयास' (चतुर्थ अंक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में ज्ञानवर्धक तकनीकी लेख, सूचनाप्रद आलेख एवं हिंदी कविताओं के साथ–साथ हिंदी भाषा से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारियों का समावेश होगा।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(डा0 स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

प्रयास

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

मेजर जन0 आर0 पी0 सांई
Maj Gen R.P. Sian
अपर महासर्वेक्षक
Additional Surveyor General

उत्तरी क्षेत्र कार्यालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग,
सर्वे कांम्पलेक्स, दक्षिण मार्ग,
सेक्टर 32–ए, चण्डीगढ़–160030

संदेष

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि उत्तराखण्ड एवं पश्चिम उ0 प्र0 भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, देहरादून द्वारा हिंदी पत्रिका 'प्रयास' अंक–4 का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए यह एक बहुत ही सराहनीय कदम है। हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से जहां एक ओर राजभाषा के प्रचार–प्रसार में वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक अभिरूचियों को उजागर करने हेतु एक मंच मिलता है और उनकी भाषा–शैली भी सशक्त होती है।

हिंदी हमारी राजभाषा के साथ साथ बोल–चाल की भाषा भी है और हमारे देश का गौरव व हमारी पहचान भी है। हमारे देश की उन्नति हमारी राजभाषा की उन्नति में छिपी है इसलिए हमें इसके विकास, प्रचार–प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत रहना है। यहां मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए हमें ज्यादा गूढ़ एवं कठिन हिंदी का प्रयोग न कर, आम बोल–चाल वाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए, ताकि सभी आसानी से हिंदी भाषा का इस्तेमाल कर पाएं।

मैं आशा करता हूँ कि इस अंक में अलग–अलग विषयों पर लिखी गई रोचक रचनाएं, कहानियां, कविताएं और विभागीय ज्ञानवर्द्धक लेख हिंदी के प्रति समर्पण और प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत करेगें और इसके पाठकों की भी हिंदी भाषा में पढ़ने–लिखने की रूचि बढ़ेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं इस अंक के लेखकों और सम्पादक–मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(मेजर जनरल आर पी सांई)

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

ओ0पी0 त्रिपाठी
O.P. Tripathi
निदेशक
Director

उत्तराखण्ड एवं पश्चिम उत्तर प्रदेश
भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
17–ईस्ट कैनाल रोड,
पत्र पेटी संख्या – 122,
देहरादून

संदेश

मेरे लिए यह हार्दिक प्रसन्नता का विशय है कि उत्तराखण्ड एवं पष्चिम उत्तर प्रदेष भू–स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र, देहरादून द्वारा अपनी गृह पत्रिका ''प्रयास'' के चतुर्थ अंक का प्रकाषन हो रहा है। कार्यालय में सरकारी काम–काज को हिन्दी में करने को बढ़ावा देना तथा हिन्दी के प्रति पाठकों की रूचि को बनाये रखना ही ''प्रयास'' का मूल उद्देष्य है।

मैं अपने केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूॅ जिन्होंने अपनी रचनायें देकर इसे प्रकाषन के योग्य बनाया।

मुझे आषा है कि पत्रिका के इस अंक से पाठकों में हिन्दी के प्रति उत्साह बढ़ेगा तथा पत्रिका के अगले अंक के लिए उपयोगी स्वरचित रचनाओं एवं लेखों से अपना सहयोग देगें। एक नागरिक के रूप में देष की राश्ट्र भाशा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में वृद्वि करना हमारा नैतिक कर्तव्य भी है।

पत्रिका के सफल प्रकाषन के लिए मेरी हार्दिक षुभकामनायें तथा सम्पादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई।

(ओ0पी0 त्रिपाठी)
निदेषक

संपादकीय

दिवाकर दुबे
हिंदी अनुवादक

सदियों तक अंग्रेजी शासन के अधीन रहने के कारण हम अपना सारा राजकाज अंग्रेजी में करने के अभ्यस्त हो गए थे। अतः आजादी के बाद सरकारी कामकाज हिंदी में करने के संकल्प के साथ 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन किया गया। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी नियमों, अधिनियमों एवं आदेशों के अनुरुप सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में निःसंदेह प्रगति हुई है परन्तु अभी भी हम सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सके हैं।

राजभाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान देने एवं निदेशालय के अधिकारियों कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उजागर करने के उद्देश्य से निदेशालय द्वारा पत्रिका के प्रकाशन की निरन्तरता बनाए रखी गई है। पत्रिका के इस अंक को नवीनता प्रदान करने तथा इसे बहुआयामी बनाने में जिन रचनाकारों का अमूल्य योगदान रहा है, मैं उन सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

''प्रयास'' के इस अंक को साकार रुप देने का श्रेय निदेशालय के निदेशक श्री ओ0 पी0 त्रिपाठी जी को है जिनकी प्रेरणा एवं कुशल मार्गदर्शन से यह कार्य संभव हुआ। पत्रिका को और अधिक सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए पाठकों की प्रतिक्रियाएं हमारे लिए प्रेरणा की स्रोत हैं। अंक पर आपके बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

(दिवाकर दुबे)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना / लेख	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ संख्या

1.	राजभषा बनाम मानसिकता	ओ. पी. त्रिपाठी	1
2.	हिंदी विषयक गतिविधियां	हिंदी अनुभाग	3
3.	कर्मफल	दिवाकर दुबे	9
4.	हिंदी भाषा प्यारी	लक्ष्मी चन्द	10
5.	केदार नाथ घटना	एस. के. रतूड़ी	11
6.	अनुवाद : एक विषिष्ट विधा	दिवाकर दुबे	13
7.	सामयिक दोहे	बी. एन. मिश्रा	15
8.	आतंकी खेल	एस. के. रतूड़ी	16
9.	आयकर नियमों को जाने और कर बचत करें	स्वपनिल सेमल्टी	17
10.	चटपटे चुटकुले	अमित कुमार	19
11.	धनु–थ्उड़ा (धनुष–बाण की प्रतियोगिता) एक पौराणिक विलुप्त प्राय कला	एस. चंद्रा	20
12.	हर चिठ्ठी पर पिनकोड क्यों जरूरी होता है	ए. के. भटनागर	23
13.	निदेशालय की तकनीकी उपलब्धियां	तकनीकी अनुभाग	24
14.	कंप्यूटर द्वारा हिल शेड मानचित्र की तैयारी	एस. के. रतूड़ी	26
15.	मेरा प्यार हिन्दुस्तान	लक्ष्मी चन्द	27
16.	खास लोगों के विरोधी भी बहुत होते है	अमित कुमार	28
17.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग की एक झलक	हिंदी अनुभाग	29
18.	वरदान	सीताराम	32
19.	उत्तराखण्ड की संस्कृति की संवाहक मुखौटा परंपरा	एस. चंद्रा	33
20.	तम्बाकू का सेवन जानलेवा/घातक है	गबर सिंह	35
21.	व्याकरणिक भूले और निराकरण	दिवाकर दुबे	37
22.	नारी की महत्ता	सीताराम	44
23.	है कौन मार्ग ऐसा	दिवाकर दुबे	46
24.	ट्रैफिक जाम	गबर सिंह	47
25.	रवीन्द्र नाथ टैगोर	सीताराम	48
26.	षराब पीना कितना हानिकारक है?	स्वरुप सिंह (सेवानिवृत्त)	49
27.	मानचित्रण एवं कंप्यूटर शब्दावली	हिंदी अनुभाग	51
28.	एक से सौ तक के संख्यावाचक शब्दों का मानक रुप	हिंदी अनुभाग	57
29.	राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले कागजात	हिंदी अनुभाग	58
30.	हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश	हिंदी अनुभाग	59